C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी B – 2013

(Outside Delhi)

[Summative Assessment II (CCE)]

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 90**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

कहते हैं कि एक बार अमीर खुसरो कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें प्यास लगी। उन्होंने देखा कि समीप के एक कुएँ पर चार पनिहारिनें पानी भर रही हैं। खुसरो ने देखते ही उनसे कहा कि मुझे बहुत ज़्यादा प्यास लग रही है, अत: पानी पिला दो। उनमें से एक औरत उन्हें पहचानती थी। उसने औरों से भी कह दिया कि यह अमीर खुसरो है। यह कवि है। वे औरतें बोली की क्या अमीर खुसरो तू ही है जिसके गीत औरतें गाती हैं और लोग उसकी पहेलियाँ तथा मुकरियाँ भी सुनते हैं ?

खुसरो ने ‘हाँ’ कहा तो एक औरत बोली - पहले हम सबको कविता सुनाओ, फिर पानी पिलाऊँगी। मैंने आज खीर बनाई है। दूसरी बोली, 'मैंने आज चरखा चलाया है।' तीसरी ने कहा 'मैंने आज ढोल बजाया है।' चौथी बोली, ‘आज तो मेरा कुत्ता गुम हो गया है।’ खुसरो ने कहा - प्यास के मारे मेरा दम निकला जा रहा है। पहले पानी पिला दो। वे बोलीं - जब तक

हमारी बात नहीं मानोगे तब तक पानी नहीं पिलायेंगी। झट खुसरो ने खीझकर कह दिया -

"खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चलाय।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय।।"

यह सुनते ही खुसरो को पानी पिला दिया गया ।

(i) अमीर खुसरो ने रास्ते में स्त्रियों को क्या करते देखा ?

(क) बातें करते

(ख) झगड़ा करते

(ग) पानी भरते

(घ) गाना गाते

(ii) अमीर खुसरो प्रसिद्ध हैं

(क) चुटकुलों के लिए

(ख) अमीरी के लिए

(ग) शिकार के लिए

(घ) गीतों और मुकरियों के लिए

(iii) दूसरी औरत ने क्या कहा ?

(क) खीर बनाई है

(ख) चरखा चलाया

(ग) कुत्ता गुम हो गया

(घ) ढोल बजाया

(iv) खुसरो की क्या शर्त थी ?

(क) पानी पिलाने की

(ख) कविता सुनाने की

(ग) चरखा चलाने की

(घ) खीर पकाने की

(v) गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है

(क) चार औरतें

(ख) पनिहारिन

(ग) कवि खुसरो

(घ) प्यास

प्र. 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

विपदाएँ और रुकावटें बाहरी हस्तक्षेप हैं। हमारी अपनी आंतरिक शक्ति इन बाहरी हमलों की चिंता नहीं करती। किसी ने सही कहा है 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। हमारा बल और निर्बलता मन के हाथ में है। मैंने अपने जीवन-लक्ष्य की मशाल मन के हाथों में थमा दी है। मजाल कि अँधेरा अंधेर रच जाए। सोच-विचार कर कार्य करना और कार्य करने में आनंद लेना मेरा लक्ष्य है। फल की चिंता मेरे मन में जगती ही नहीं, लेकिन फल-प्राप्ति का आनंद भी बिना किसी प्रदर्शन और प्रचार के ले लेता हूँ। यदि हम समाधान के मोर्चे पर संकल्पवान बनें तो समस्याएँ जीवन को तोड़ नहीं सकतीं। उलझनें सुलझाई जा सकती हैं। जीवन में समाधान पर विश्वास और आशावान बने रहना चाहिए। इसकी पूर्ति के लिए तन-मन-धन से प्रतिपल तत्पर रहना चाहिए। उलझनों का दर्द और आफ़त की मार सहने की ताकत को बनाए रखना जीवन-धर्म है।

(i) हमारी आंतरिक शक्ति को परवाह नहीं है

(क) भौतिक आकर्षण की

(ख) आँधी तूफ़ान की

(ग) विपदाओं और रुकावटों की

(घ) धूप और गर्मी का

(ii)'मन चंगा तो कठौती में गंगा' का आशय है

(क) भौतिक समृद्धि सब कुछ है

(ख) स्वास्थ्य में ही जीवन का सुख है

(ग) मन की जीत पर ही सब जीत आधारित है

(घ) मानसिक सुख समस्त सुखों का आधार है

(iii) समस्याएँ जीवन के लिए सरल कब बन जाती हैं ?

(क) आंतरिक दृष्टि के क्षीण होने पर

(ख) दृढ़निच्चयी बनने पर

(ग) ईश्वर के प्रति आस्थावान होने पर

(घ) आत्मपौरुष का आश्रय लेने पर

(iv) जीवन का धर्म है

(क) दर्द और आफ़त सहने की ताक़त

(ख) दुख-दर्द न सहने की ताक़त

(ग) उलझनों में फँसे रहने की ताक़त

(घ) तन-मन-धन अर्पित करने की ताक़त

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

(क) सुखी मन

(ख) विपदाएँ और रुकावटें

(ग) जीवन-धर्म

(घ) संकल्प-शक्ति

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

धरती अपनी, समदरसी की साधना,
संकल्पों के सूरज का आकाश है।
चाँद-सितारे वासी अपने गाँव के
अभ्यासी आजन्म धूप के, छाँव के
नील कुसुम के बीज बिछाते रेत में
विश्वासी जीवन का बिरवा खेत में
स्वतंत्रता का राजमुकुट हर शीश पर
मन का राजसिंहासन सबके पास।
मानवता की मर्यादा जनतंत्र है
अनुशासन ही जीवन का गुरुमंत्र है
शूल-फूल से भरे हमारे रास्ते
लेकिन मंज़िल पर अपना विश्वास है।
सत्य, अहिंसा, शांति समय के सारथी
जीवन करवट बदल रहा हर मोड़ पर
आकुल होकर देख रहा इतिहास है।।

(i) 'अभ्यासी आजन्म धूप के

(क) केवल सुख सहने वाले

(ख) केवल दुख झेलने वाले

(ग) दुख-सुख सहने वाले

(घ) दुख में घबरा जाने वाले

(ii) “संकल्पों के सूरज” से कवि का तात्पर्य है

(क) देशवासी शक्तिमान् है

(ख) देशवासी दृढ़निश्चयी हैं

(ग) देशवासी सच्चे संरक्षक हैं

(घ) देशवासी सूरज की तरह तेंजस्वी हैं

(iii) ‘मन का राजसिंहासन सबके पास हैं - इस पंक्ति से कवि का आशय है

(क) भारतवासी मन का राजसिंहासन चाहते हैं

(ख) भारतीयों के मन में राज्य-प्राप्ति की इच्छा है

(ग) भारतवासी मनोबल से युक्त मन के राजा हैं

(घ) भारतवासी मनमानी करते हैं

(iv) जनतंत्र मर्यादा है

(क) दानवता की

(ख) मानवता की

(ग) उपद्रवों की

(घ) अशांति की

(v) काव्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है

(क) परतंत्र भारत

(ख) उपद्रवी भारत

(ग) स्वत्रंत भारत

(घ) राजशाही भारत

प्र. 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

निमंत्रण मिलेगा सरल हास का, तो
लिए हाथ में फूल आगे बढ़ेगे
चुनौती मिलेगी कुटिल भौंह की, तो
लिए हाथ में शूल आगे बढ़ेंगे।
लिए चंद्र का तोष है आँख दाईं
लिए सूर्य का रोष है आँख बाईं
समय की विकट धार को हम सदा ही
बदलते रहे थे - बदलते रहेंगे।
प्रकृति से हमें जो मिला बल, उसे हम
सदा निर्बलों की समझते हैं थाती
इसी से किसी चोट खाए हुए की
दशा देखकर आँख है तिलमिलाती।
तवारीख़ से कोई ले ले गवाही
हमारे ही ज्वालामुखी की तपन से
अहंकारियों की दिमागी कुटिलता
पिघलती रही थी पिघलती रहेगी।

(i) काव्यांश में चुनौती मिलने पर क्या करने की बात कही गई है ?

(क) फूल लेकर सामना करने की

(ख) शस्त्र लेकर सामना करने की

(ग) मुँह मोड़कर भाग जाने की

(घ) सामने आकर समर्पण करने की

(ii) 'सूर्य का रोष' प्रतीक है

(क) शांति का

(ख) अशांति का

(ग) क्रांति का

(घ) क्रोध का

(iii) 'समय की विकट धार को बदलने' से तात्पर्य है

(क)समय का सामना नहीं करना

(ख)समय के विपरीत चल देना

(ग)समय की परवाह न करना

(घ)समय को अपने अनुकूल कर लेना

(iv) प्राकृतिक शक्ति की सार्थकता है

(क)निर्बलों की सहायता में

(ख)निर्बलों को सताने में

(ग)निर्बलों को लुभाने में

(घ)निर्बलों को पीड़ा देने में

(v) 'तवारीख' से तात्पर्य है

(क) आज की तिथि

(ख) आगे आने वाली तिथि

(ग) वर्तमान समय

(घ) इतिहास

खण्ड ख

प्र. 5. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए : 1x2=2

(i) पानी भरी सड़क पर निकलना कठिन है।

(ii) वह रोज़ मंदिर जाता रहता था।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1x3=3

(i) वीर लोग धरती की शोभा हैं।

(ii) हम बनारस घूमने गए थे।

(iii) क्या तुम आज यहीं रहोगे ?

प्र.6. (क) रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार लिखिए : 1

तुम वहाँ मत जाओ जहाँ तुम्हारे विरोधी हों।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए : 1x2=2

(i) वह कोच की सीख के अनुसार ही खेलता है। (मिश्र)

(ii) इस घर में कुत्ते हैं। यहाँ आने में ख़तरा है। (संयुक्त)

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए : 1x3=3

(i) अध्यापक से हिन्दी पढ़ाई है।

(ii) क्या आप खा लिए हैं ?

(iii) केवल यहाँ दो लोग रहते हैं।

प्र. 7. (क) निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए : 1x2=2

चिकित्साध्यक्ष, सर्वोत्कृष्ट

(ख) निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए : $\frac{1}{2}\times 2=1$

उप + अध्याय, लघु + आहार

प्र. 8 (क) निम्नलिखित का समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए :

देवलोक $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}=1$

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

खराब जो यश $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}=1$

प्र. 9. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए की उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : 1x4=4

(i) पहाड़ होना

(ii) जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना

(iii) अधजल गगरी छलकत जाए

(iv) ऐरा गैरा नत्थू खैरा

खण्ड ग

10. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x1

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँह।।

(i) अत्यंत गहन वन में कौन बैठी है ?

(क) नायिक

(ख) दोपहरी

(ग) चाँदनी

(घ) छाया

(ii) छाया पाने की इच्छा कब होती है ?

(क) जेठ की भीषण गर्मी में

(ख) सूरज उगने पर

(ग) वर्षा होने पर

(घ) वन में आग लगने पर

(iii) 'पैठि सदन' का तात्पर्य है

(क) आकाश में प्रवेश कर

(ख) अपने घर में प्रवेश कर

(ग) अपने घर से दूर जाकर

(घ) अपने घर को छोड़कर

(iv) निम्नलिखित में 'सदन' का समानार्थक नहीं है :

(क) गेह

(ख) निकेतन

(ग) सधन

(घ) आलय

(v) प्रस्तुत दोहे की भाषा है

(क) मैथिलि

(ख) अवधी

(ग) ब्रज

(घ) हिन्दी

अथवा

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी ।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) अनंत अंतरिक्ष में कौन खड़ा है ?

(क) सूर्य-चंद्र

(ख) इन्द्र

(ग) परमेश्वर

(घ) देवसमूह

(ii) अंतरिक्ष में खड़े देव अमनी बाहु क्यों बढ़ा रहे हैं ?

(क) मदद के लिए

(ख) स्वस्थता के लिए

(ग) समृद्धि के लिए

(घ) मार्गदर्शन के लिए

(iii) 'परस्परावलंब' का आशय है

(क) एक-दूसरे का सहयोग लेना

(ख) एक-दूसरे से शत्रुता करना

(ग) एक-दूसरे से छल-कपट करना

(घ) दूसरे से स्वार्थ सिद्ध कराना

(iv) कवि मनुष्य को किस प्रकार रहने की सलाह देता है ?

(क) असहयोग की भावना से

(ख) सहयोग की भावना से

(ग) हिंसा की भावना से

(घ) पराधीनता की भावना से

(v) कविता का संदेश है

(क) जीवन की सार्थकता स्वार्थ सिद्धि में

(ख) जीवन की सार्थकता कुटिल व्यवहार में

(ग) जीवन की सार्थकता परोपकार में

(घ) जीवन की सार्थकता देवों के व्यवहार में

प्र. 11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3

(क) 'गिरगिट' कहानी में ख्यूक्रिन ने कुत्ते के काटने के बदले मुआवज़ा पाने की क्या दलीलें दीं ? क्या आप उन दलीलों से सहमत हैं ? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

(ख) जनरल साहब के भाई के साथ कुत्ते का सम्बन्ध जानकर ओचुमेलाव के विचार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

(ग) 'गाँधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।' गित्री का सोना' पाठ के आधार पर टिपण्णी कीजिए।

प्र. 12. 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ का लेखक " मिट्टी मिले खो के सभी निशान" - उक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहता है ? उदहारण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'कारतूस' पाठ के आधार पर लिखिए की जांबाज़ के जीवन का लक्ष्य अंग्रेजों को इस देश से बाहर करना था।

प्र. 13. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दुनिया कैसे वजूद में आई ? पहले क्या थी ? किस बिन्दु से इसकी यात्रा शुरू हुई ? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चूका है।

(क) धरती किसी एक की नहीं है लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? 2

(ख) धरती की हिस्सेदारी में दीवारे किसने और कैसे खड़ी कर दीं ? 2

(ग) संसार अब कैसा हो चुका है ? 1

अथवा

चंद्र लोग कहते हैं गाँधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी क़ीमत जानते थे। इसीलिए तो वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

हाँ, पर गाँधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में तांबा नहीं बल्कि तांबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

(क) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' का क्या तात्पर्य है ? 2

(ख) गाँधीजी व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर पर कैसे चढ़ाते थे । 2

(ग) गाँधीजी के पीछे देश क्यों गया ? 1

प्र. 14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3x3=9

(क) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए कौन-सा दीप जलाया है और वह उस दीपक को विहंस-विहंस जलने के लिए क्यों कह रही है ?

(ख) कवि बिहारी का विश्वास है कि सच्चे मन में ही राम बसते हैं, बाह्य आडंबर में नहीं। बिहारी-रचित दोहे के संदर्भ में प्रस्तुत कथन की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ रखी है ? क्या हम उन अपेक्षाओं को पूरा कर रहे हैं ? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

(घ) 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने से क्या अपेक्षा करता है ?

प्र. 15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3+3=6

(क) टोपी के भरे-पुरे परिवार में सभी प्रकार की सुविधाएँ थी, फिर भी वह इफ्फ़न की हवेली की तरफ क्यों खिंचा चला जाता था? स्पष्ट कीजिए।

(ख) टोपी ने मुन्नी बाबु की किस असलियत को घर वालों से छिपाकर रखा था, और क्यों ?

(ग) 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि बच्चों की रूचि पढ़ाई में क्यों नहीं थी। माँ-बाप को उनकी पढ़ाई व्यर्थ क्यों लगती थी ?

प्र. 16. मास्टर प्रीतम चंद का विधार्थियों को अनुशासित रखने के लिए जो तरीक़ा था, वह आज की शिक्षा-व्यवस्था के जीवन-मूल्यों के अनुसार उचित है या अनुचित ? तर्कसहित स्पष्ट कीजिए। 4

खण्ड घ

प्र. 17. दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) ऋतुओं के बदलते रूप

- भारत की ऋतुएँ और उनके रूप
- आजकल ऋतुओं में अपूर्व परिवर्तन और कारण
- बदलती ऋतुओं का जनजीवन पर प्रभाव

(ख) शारीरिक शिक्षा और योग

- शारीरिक शिक्षा क्या और क्यों ?
- शारीरिक शिक्षा और योग
- प्रस्ताव और अच्छे परिणाम

(ग) हमारे पर्व

- पर्व क्या और क्यों ?
- पर्वों से लाभ, और कुप्रभाव
- कुप्रभाव से बचने के उपाय

प्र. 18. विज्ञान की पढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए विधालय की ओर से किए गए उपायों के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए। 5

अथवा

हिन्दी-दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए, किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए।

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी B – 2013

(Outside Delhi)

[Summative Assessment II (CCE)]

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 90**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

कहते हैं कि एक बार अमीर खुसरो कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें प्यास लगी। उन्होंने देखा कि समीप के एक कुएँ पर चार पनिहारिनें पानी भर रही हैं। खुसरो ने देखते ही उनसे कहा कि मुझे बहुत ज़्यादा प्यास लग रही है, अत: पानी पिला दो। उनमें से एक औरत उन्हें पहचानती थी। उसने औरों से भी कह दिया कि यह अमीर खुसरो है। यह कवि है। वे औरतें बोली की क्या अमीर खुसरो तू ही है जिसके गीत औरतें गाती हैं और लोग उसकी पहेलियाँ तथा मुकरियाँ भी सुनते हैं ?

खुसरो ने 'हाँ' कहा तो एक औरत बोली - पहले हम सबको कविता सुनाओ, फिर पानी पिलाऊँगी। मैंने आज खीर बनाई है। दूसरी बोली, 'मैंने आज चरखा चलाया है।' तीसरी ने कहा 'मैंने आज ढोल बजाया है।' चौथी बोली, 'आज तो मेरा कुत्ता गुम हो गया है।' खुसरो ने कहा - प्यास के मारे मेरा दम निकला जा रहा है। पहले पानी पिला दो। वे बोलीं - जब तक

हमारी बात नहीं मानोगे तब तक पानी नहीं पिलायेंगी। झट खुसरो ने खीझकर कह दिया -

"खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चलाय।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय।।"

यह सुनते ही खुसरो को पानी पिला दिया गया।

(i) अमीर खुसरो ने रास्ते में स्त्रियों को क्या करते देखा ?

(क) बातें करते

(ख) झगड़ा करते

(ग) <u>पानी भरते</u>

(घ) गाना गाते

(ii) अमीर खुसरो प्रसिद्ध हैं

(क) चुटकुलों के लिए

(ख) अमीरी के लिए

(ग) शिकार के लिए

(घ) <u>गीतों और मुकरियों के लिए</u>

(iii) दूसरी औरत ने क्या कहा ?

(क) खीर बनाई है

(ख) <u>चरखा चलाया</u>

(ग) कुत्ता गुम हो गया

(घ) ढोल बजाया

(iv) खुसरो की क्या शर्त थी ?

(क) <u>पानी पिलाने की</u>

(ख) कविता सुनाने की

(ग) चरखा चलाने की

(घ) खीर पकाने की

(v)गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है

(क) चार औरतें

(ख) पनिहारिन

(ग) कवि खुसरो

(घ) प्यास

प्र. 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

विपदाएँ और रुकावटें बाहरी हस्तक्षेप हैं। हमारी अपनी आंतरिक शक्ति इन बाहरी हमलों की चिंता नहीं करती। किसी ने सही कहा है 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। हमारा बल और निर्बलता मन के हाथ में है। मैंने अपने जीवन-लक्ष्य की मशाल मन के हाथों में थमा दी है। मजाल कि अँधेरा अंधेर रच जाए। सोच-विचार कर कार्य करना और कार्य करने में आनंद लेना मेरा लक्ष्य है। फल की चिंता मेरे मन में जगती ही नहीं, लेकिन फल-प्राप्ति का आनंद भी बिना किसी प्रदर्शन और प्रचार के ले लेता हूँ। यदि हम समाधान के मोर्चे पर संकल्पवान बनें तो समस्याएँ जीवन को तोड़ नहीं सकतीं। उलझनें सुलझाई जा सकती हैं। जीवन में समाधान पर विश्वास और आशावान बने रहना चाहिए। इसकी पूर्ति के लिए तन-मन-धन से प्रतिपल तत्पर रहना चाहिए। उलझनों का दर्द और आफ़त की मार सहने की ताकत को बनाए रखना जीवन-धर्म है।

(i) हमारी आंतरिक शक्ति को परवाह नहीं है

(क) भौतिक आकर्षण की

(ख) आँधी तूफान की

(ग) विपदाओं और रुकावटों की

(घ) धूप और गर्मी का

(ii)'मन चंगा तो कठौती में गंगा' का आशय है

(क) भौतिक समृद्धि सब कुछ है

(ख) स्वास्थ्य में ही जीवन का सुख है

(ग) मन की जीत पर ही सब जीत आधारित हैं

(घ) मानसिक सुख समस्त सुखों का आधार है

(iii) समस्याएँ जीवन के लिए सरल कब बन जाती हैं ?

(क) आंतरिक दृष्टि के क्षीण होने पर

(ख) दृढ़निश्चयी बनने पर

(ग) ईश्वर के प्रति आस्थावान होने पर

(घ) आत्मपौरुष का आश्रय लेने पर

(iv) जीवन का धर्म है

(क) दर्द और आफत सहने की ताकत

(ख) दुख-दर्द न सहने की ताकत

(ग) उलझनों में फँसे रहने की ताकत

(घ) तन-मन-धन अर्पित करने की ताकत

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

(क) सुखी मन

(ख) विपदाएँ और रुकावटें

(ग) जीवन-धर्म

(घ) संकल्प-शक्ति

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

धरती अपनी, समदरसी की साधना,
संकल्पों के सूरज का आकाश है।
चाँद-सितारे वासी अपने गाँव के
अभ्यासी आजन्म धूप के, छाँव के
नील कुसुम के बीज बिछाते रेत में
विश्वासी जीवन का बिरवा खेत में
स्वतंत्रता का राजमुकुट हर शीश पर
मन का राजसिंहासन सबके पास।
मानवता की मर्यादा जनतंत्र है
अनुशासन ही जीवन का गुरुमंत्र है
शूल-फूल से भरे हमारे रास्ते
लेकिन मंज़िल पर अपना विश्वास है।
सत्य, अहिंसा, शांति समय के सारथी
जीवन करवट बदल रहा हर मोड़ पर
आकुल होकर देख रहा इतिहास है।।

(i) 'अभ्यासी आजन्म धूप के, छाँव के ' - का तात्पर्य है

(क) केवल सुख सहने वाले

(ख) केवल दुख झेलने वाले

(ग) दुख-सुख सहने वाले

(घ) दुख में घबरा जाने वाले

(ii) "संकल्पों के सूरज" से कवि का तात्पर्य है

(क) देशवासी शक्तिमान् हैं

(ख) देशवासी दृढ़निश्चयी हैं

(ग) देशवासी सच्चे संरक्षक हैं

(घ) देशवासी सूरज की तरह तेंजस्वी हैं

(iii) 'मन का राजसिंहासन सबके पास है' - इस पंक्ति से कवि का आशय है

(क) भारतवासी मन का राजसिंहासन चाहते हैं

(ख) भारतीयों के मन में राज्य-प्राप्ति की इच्छा है

(ग) भारतवासी मनोबल से युक्त मन के राजा हैं

(घ) भारतवासी मनमानी करते हैं

(iv) जनतंत्र मर्यादा है

(क) दानवता की

(ख) मानवता की

(ग) उपद्रवों की

(घ) अशांति की

(v) काव्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है

(क) परतंत्र भारत

(ख) उपद्रवी भारत

(ग) स्वत्रंत भारत

(घ) राजशाही भारत

प्र. 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

निमंत्रण मिलेगा सरल हास का, तो
लिए हाथ में फूल आगे बढ़ेगे
चुनौती मिलेगी कुटिल भौंह की, तो
लिए हाथ में शूल आगे बढ़ेंगे।
लिए चंद्र का तोष है आँख दाईं
लिए सूर्य का रोष है आँख बाईं
समय की विकट धार को हम सदा ही
बदलते रहे थे - बदलते रहेंगे।
प्रकृति से हमें जो मिला बल, उसे हम
सदा निर्बलों की समझते हैं थाती
इसी से किसी चोट खाए हुए की
दशा देखकर आँख है तिलमिलाती।
तवारीख़ से कोई ले ले गवाही
हमारे ही ज्वालामुखी की तपन से
अहंकारियों की दिमागी कुटिलता
पिघलती रही थी पिघलती रहेगी।

(i) काव्यांश में चुनौती मिलने पर क्या करने की बात कही गई है ?

(क) फूल लेकर सामना करने की

(ख) शस्त्र लेकर सामना करने की

(ग) मुँह मोड़कर भाग जाने की

(घ) सामने आकर समर्पण करने की

(ii) 'सूर्य का रोष' प्रतीक है

(क) शांति का

(ख) अशांति का

(ग) क्रांति का

(घ) क्रोध का

(iii) 'समय की विकट धार को बदलने' से तात्पर्य है

(क) समय का सामना नहीं करना

(ख) समय के विपरीत चल देना

(ग) समय की परवाह न करना

(घ) समय को अपने अनुकूल कर लेना

(iv) प्राकृतिक शक्ति की सार्थकता है

(क) निर्बलों की सहायता में

(ख) निर्बलों को सताने में

(ग) निर्बलों को लुभाने में

(घ) निर्बलों को पीड़ा देने में

(v) 'तवारीख' से तात्पर्य है

(क) आज की तिथि

(ख) आगे आने वाली तिथि

(ग) वर्तमान समय

(घ) इतिहास

खण्ड ख

प्र. 5. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए : 1x2=2

(i) पानी भरी सड़क पर निकलना कठिन है।

उत्तर - पानी भरी सड़क - संज्ञा पदबंध

(ii) वह रोज़ मंदिर जाता रहता था।

उत्तर - जाता रहता - क्रिया पदबंध

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1x3=3

(i) वीर लोग धरती की शोभा हैं ।

उत्तर - वीर - विशेषण,गुणवाचक,पुल्लिंग

(ii) हम बनारस घूमने गए थे ।

उत्तर - बनारस - संज्ञा व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन

(iii) क्या तुम आज यहीं रहोगे ?

उत्तर - रहोगे - क्रिया, भविष्यकाल, अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग एकवचन

प्र.6. (क) रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार लिखिए : 1

तुम वहाँ मत जाओ जहाँ तुम्हारे विरोधी हों।

उत्तर - मिश्र वाक्य

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए : 1x2=2

(i) वह कोच की सीख के अनुसार ही खेलता है। (मिश्र)

उत्तर - वह उसी प्रकार खेलता है जैसा उसका कोच सिखाता है।

(ii) इस घर में कुत्ते हैं। यहाँ आने में ख़तरा है। (संयुक्त)

उत्तर - इस घर मैं कुत्ते हैं इसलिए यहाँ आने में ख़तरा है।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए : 1x3=3

(i) अध्यापक से हिन्दी पढ़ाई है।

उत्तर - अध्यापक ने हिन्दी पढ़ाई है।

(ii) क्या आप खा लिए हैं ?

उत्तर - क्या आप खाना खा चुके हैं ?

(iii) केवल यहाँ दो लोग रहते हैं।

उत्तर - यहाँ केवल दो व्यक्ति रहते हैं।

प्र. 7. (क) निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए : 1x2=2

चिकित्साध्यक्ष, सर्वोत्कृष्ट

उत्तर - चिकित्साध्यक्ष - चिकित्सा + अध्यक्ष

सर्वोत्कृष्ट - सर्व + उत्कृष्ट

(ख) निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए : $\frac{1}{2}\times2=1$

उप + अध्याय, लघु + आहार

उत्तर - उप + अध्याय - उपाध्याय

लघु + आहार - लघुआहार

प्र. 8 (क) निम्नलिखित का समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए :

देवलोक $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}=1$

उत्तर - देवलोक - देवों का लोक - तत्पुरुष समास

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

खराब जो यश $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}=1$

उत्तर - ख़राब जो यश - अपयश - कर्मधारय समास

प्र. 9. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए की उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : 1x4=4

(i) पहाड़ होना

उत्तर - आजकल की बढ़ती मंहगाई से जीवन पहाड़ हो चला है ।

(ii) जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना

उत्तर - बेटे के मृत शरीर को देखकर माँ के जिगर के टुकडे-टुकड़े हो गए।

(iii) अधजल गगरी छलकत जाए

उत्तर - अज्ञानी का संत के सामने उपदेश देना यह तो वही बात हुई अधजल गगरी छलकत जाए।

(iv) ऐरा गैरा नत्थू खैरा

उत्तर - हमें हमारी बुद्धि से काम लेना चाहिए न कि हर एक ऐरे गैरे नत्थू खैरे की बात सुनकर कार्य करना चाहिए।

खण्ड ग

10. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x1

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँह।।

(i) अत्यंत गहन वन में कौन बैठी है ?

(क) नायिक

(ख) दोपहरी

(ग) चाँदनी

(घ) छाया

(ii) छाया पाने की इच्छा कब होती है ?

(क) जेठ की भीषण गर्मी में

(ख) सूरज उगने पर

(ग) वर्षा होने पर

(घ) वन में आग लगने पर

(iii) 'पैठि सदन' का तात्पर्य है

(क) आकाश में प्रवेश कर

(ख) अपने घर में प्रवेश कर

(ग) अपने घर से दूर जाकर

(घ) अपने घर को छोड़कर

(iv) निम्नलिखित में 'सदन' का समानार्थक नहीं है :

(क) गेह

(ख) निकेतन

(ग) सधन

(घ) आलय

(v) प्रस्तुत दोहे की भाषा है

(क) मैथिलि

(ख) अवधी

(ग) ब्रज

(घ) हिन्दी

अथवा

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी ।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) अनंत अंतरिक्ष में कौन खड़ा है ?

(क) सूर्य-चंद्र

(ख) इन्द्र

(ग) परमेश्वर

(घ) <u>देवसमूह</u>

(ii) अंतरिक्ष में खड़े देव अमनी बाहु क्यों बढ़ा रहे हैं ?

(क) मदद के लिए

(ख) स्वस्थता के लिए

(ग) समृद्धि के लिए

(घ) <u>मार्गदर्शन के लिए</u>

(iii) 'परस्परावलंब' का आशय है

(क) <u>एक-दूसरे का सहयोग लेना</u>

(ख) एक-दूसरे से शत्रुता करना

(ग) एक-दूसरे से छल-कपट करना

(घ) दूसरे से स्वार्थ सिद्ध कराना

(iv) कवि मनुष्य को किस प्रकार रहने की सलाह देता है ?

(क) असहयोग की भावना से

(ख) सहयोग की भावना से

(ग) हिंसा की भावना से

(घ) पराधीनता की भावना से

(v) कविता का संदेश है

(क) जीवन की सार्थकता स्वार्थ सिद्धि में

(ख) जीवन की सार्थकता कुटिल व्यवहार में

(ग) जीवन की सार्थकता परोपकार में

(घ) जीवन की सार्थकता देवों के व्यवहार में

प्र. 11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3x2=6

(क) 'गिरगिट' कहानी में ख्यूक्रिन ने कुत्ते के काटने के बदले मुआवज़ा पाने की क्या दलीलें दीं ? क्या आप उन दलीलों से सहमत हैं ? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर - 'गिरगिट' कहानी में ख्यूक्रिन ने कुत्ते के काटने के बदले मुआवज़ा पाने की दलीलें दीं कि वह पेशे से एक सुनार है और यदि उसकी उँगली ठीक नहीं होती तो करीब एक सप्ताह तक उसके काम का नुकसान होगा। मेरे अनुसार ख्यूक्रिन की दलीलें सही थी क्योंकि एक तो इस तरह पालतू कुत्ते को भरे बाज़ार में छोड़ना उचित नहीं था और फिर यदि गरीब व्यक्ति एक सप्ताह तक काम नहीं करेगा तो अपना पेट कैसे पालेगा।

(ख) जनरल साहब के भाई के साथ कुत्ते का सम्बन्ध जानकर ओचुमेलाव के विचार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

उत्तर - ओचुमेलॉव पहले जिस कुत्ते को भद्दा, मरियल और आवारा कुत्ता कहता है परन्तु जैसे ही उसे पता चलता है कि वह कुत्ता जनरल साहब के भाई का है उसी कुत्ते को वह सुन्दर डाँगी कहकर संबोधित करने लगता है और कुत्ते को उसके मालिक तक पहुँचवा देता है।

(ग) 'गाँधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।' गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - गाँधीजी के नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी उन्होंने अपने सारे आंदोलनों को को व्यावहारिकता के स्तर से आदर्शों के स्तर पर पर चढ़कर चलाया था। इसीलिए उनके सारे आन्दोंलन भारत छोड़ों,सत्याग्रह,असहयोग आंदोंलन, दांडीमार्च सफल हुए। उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपने आदर्शों का हथियार बनाया। इन्हीं सिद्धांतों के बलबूते पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर ली। उनके नेतृत्व में लाखों भारतीयों ने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। देशवासी उनके नेतृत्व को स्वीकार करके गर्व का अनुभव करते थे।

प्र. 12. 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ का लेखक " मिट्टी मिले खो के सभी निशान" - उक्ति के माध्यम से क्या कहना चाहता है ? उदहारण देकर स्पष्ट कीजिए। 5

उत्तर - इन उक्ति के द्‌वारा लेखक यह कहना चाहता है कि सभी प्राणी और मनुष्य की नजरों में एक है। सभी को बनानेवाला वह एक

ही ईश्वर है अत:वह किसी में कोई भेदभाव नहीं करता है। सभी प्राणी धरती में जन्म लेते है और इसी धरती में विलीन भी हो जाते हैं।

अथवा

'कारतूस' पाठ के आधार पर लिखिए कि जांबाज़ के जीवन का लक्ष्य अंग्रेजों को इस देश से बाहर करना था।

उत्तर - जाबांज़ अर्थात् वज़ीर अली के दिल में अंग्रेजों के खिलाफ़ नफरत भरी हुई थी। उसने पाँच महीने के अंतर पर ही अवध के दरबार से अंग्रेजों को बाहर कर दिया था। वजीर अली सआदत अली को अवध से हटा कर वहाँ का प्रशासक बनना चाहता था। इससे यह स्पष्ट होता है कि जाबांज़ के जीवन का लक्ष्य अंग्रेजों को इस देश से बाहर करना था।

प्र. 13. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दुनिया कैसे वजूद में आई ? पहले क्या थी ? किस बिन्दु से इसकी यात्रा शुरू हुई ? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चूका है।

(क) धरती किसी एक की नहीं है लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? 2

उत्तर - संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। इसलिए लेखक ने ऐसा कहा है।

(ख) धरती की हिस्सेदारी में दीवारें किसने और कैसे खड़ी कर दीं ? 2

उत्तर - धरती की हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी।

(ग) संसार अब कैसा हो चुका है ? 1

उत्तर - पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चूका है।

अथवा

चंद्र लोग कहते हैं गाँधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी क़ीमत जानते थे। इसीलिए तो वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

हाँ, पर गाँधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में तांबा नहीं बल्कि तांबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

(क) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' का क्या तात्पर्य है ? 2

उत्तर - प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट उन्हें कहते हैं जो आदर्शों को व्यवहारिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

(ख) गाँधीजी व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर पर कैसे चढ़ाते थे । 2

उत्तर - गाँधीजी व्यावहारिकता को अपने सत्य, कर्मनिष्ठा, ईमानदारी और पवित्रता के जरिए आदर्शों को स्तर पर चढ़ाते थे।

(ग) गाँधीजी के पीछे देश क्यों गया ? 1

उत्तर - गाँधीजी केवल आदर्शवादी ही नहीं थे बल्कि व्यावहारिकता का भी उन्हें अच्छा ज्ञान था उनका आदर्श वाद व्यावहारिकता के साथ जुड़ा होने के कारण ही गाँधीजी के पीछे देश गया।

प्र. 14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3x3=9

(क)'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए कौन-सा दीप जलाया है और वह उस दीपक को विहँस-विहँस जलने के लिए क्यों कह रही है ?

उत्तर - 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए अपने हृदय रूपी दीप को जलाया है। प्रियतम के पथ को आलोकित करने के लिए वह दीपक को विहँस-विहँस जलने के लिए कह रही है। ऐसा करने से वे अपने हृदय में उस प्रभु के प्रति आस्था और भक्ति का भाव जगाए रखना चाहती है।

(ख)कवि बिहारी का विश्वास है कि सच्चे मन में ही राम बसते हैं, बाह्य आडंबर में नहीं। बिहारी-रचित दोहे के संदर्भ में प्रस्तुत कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर - बिहारी जी के अनुसार भक्ति का सच्चा रूप हृदय की सच्चाई में निहित है। बिहारी जी ईश्वर प्राप्ति के लिए धर्म कर्मकांड

को दिखावा समझते थे। माला जपने, छापे लगवाना, माथे पर तिलक लगवाने से प्रभु नहीं मिलते। जो इन व्यर्थ के आडंबरों में भटकते रहते हैं वे झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते हैं, परन्तु भगवान राम तो सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

(ग) 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ रखी हैं ? क्या हम उन अपेक्षाओं को पूरा कर रहे हैं ? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर - 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से अपना सर्वस्व न्योछावर करने की अपेक्षाएँ रखी है। परन्तु हम कवि की अपेक्षा पर खरे नहीं उतरे है क्योंकि एक तो देश की सत्ता चलानेवाले सैनिकों को शत्रुओं का सामना करने की पूरी आज़ादी नहीं देते हैं और दूसरी और आम जनता भी देश हित से कोई सरोकार न रखते हुए अपनी स्वार्थपूर्ति में लगी रहती है।

(घ) 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने से क्या अपेक्षा करता है ?

उत्तर - 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने से अपेक्षा करता है कि वह यह नहीं चाहता कि उस पर कोई विपदा न आए, जीवन में कोई दुख न आए बल्कि वह यह चाहता है कि वह मुसीबत तथा दुखों से घबराएँ नहीं, बल्कि आत्म-विश्वास के साथ निर्भीक होकर हर परिस्थितियों का सामना करने का साहस उसमें में आ जाए।

प्र. 15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3+3=6

(क)टोपी के भरे-पूरे परिवार में सभी प्रकार की सुविधाएँ थी, फिर भी वह इफ्फ़न की हवेली की तरफ क्यों खिंचा चला जाता था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इफ्फ़न की दादी और टोपी की गहरी आत्मीयता, दादी का उसके प्रति प्रेम और उनसे मिलकर उसे होनेवाली ख़ुशी के कारण टोपी इफ्फ़न की हवेली की तरफ खिंचा चला जाता था।

(ख)टोपी ने मुन्नी बाबू की किस असलियत को घर वालों से छिपाकर रखा था, और क्यों ?

उत्तर - टोपी ने मुन्नी बाबू की कबाब खानेवाली बात को घरवालों से छिपाकर रखा था।

टोपी ने इस बात को इसलिए छिपा रखा था क्योंकि मुन्नी बाबू ने बात को छिपाने के लिए टोपी को रिश्वत दी थी।

(ग)'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि बच्चों की रूचि पढ़ाई में क्यों नहीं थी। माँ-बाप को उनकी पढ़ाई व्यर्थ क्यों लगती थी?

उत्तर - बच्चों को पढ़ाई में रूचि इसलिए नहीं थी क्योंकि उनके माता-पिता को ही सर्वप्रथम पढ़ाई का महत्त्व नहीं पता था इसलिए बच्चा यदि स्कूल न जाना चाहे तो उसे स्कूल भेजने की जबरदस्ती भी नहीं करते थे।

माँ-बाप को उनकी पढ़ाई व्यर्थ लगने का कारण उनका अपना व्यावसायिक पेशा था जिसमें उनके अनुसार ज्यादा पढ़ने-लिखने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

प्र. 16. मास्टर प्रीतम चंद का विधार्थियों को अनुशासित रखने के लिए जो तरीक़ा था, वह आज की शिक्षा-व्यवस्था के जीवन-मूल्यों के अनुसार उचित है या अनुचित ? तर्कसहित स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर - इस पाठ में अनुशासन बनाए रखने के लिए बच्चों को कठोर यातनाएँ दी जाती थी साथ ही उनके उत्साह बढ़ाने के लिए शाबासियाँ भी जाती थी परन्तु वर्तमान परिवेश में शिक्षकों को बच्चों के साथ मारपीट का अधिकार नहीं दिया गया है। आजकल बच्चों के मनोविज्ञान को समझने के लिए शिक्षकों को परिक्षण दिया जाता है कि वे बच्चे की भावनाओं को समझें, उनके दुर्व्यवहार के कारण को समझे, उन्हें उनकी गलती का एहसास कराए तथा उनके साथ मित्रता व ममता का व्यवहार किया जाए जिससे वे बच्चों को ठीक से समझ कर उनके साथ उचित व्यवहार कर सके।

खण्ड घ

प्र. 17. दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) ऋतुओं के बदलते रूप

- भारत की ऋतुएँ और उनके रूप
- आजकल ऋतुओं में अपूर्व परिवर्तन और कारण
- बदलती ऋतुओं का जनजीवन पर प्रभाव

उत्तर -

भारत में प्रत्येक ऋतू दो-दो महीने रहती है। चैत और वैशाख में वसंत, ज्येष्ठ और आषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण और भाद्रपद में वर्षा, अश्विन और कार्तिक में शरद, मार्गशीर्ष और पौष में हेमंत, माघ और फाल्गुन में शिशिर (पतझड़) भारत में प्राय:सभी स्थानों पर ये ऋतूएँ अपना रूप एक बार अवश्य दिखलाती है।

वर्षाऋतू को वैसे तो जीवनदायनी माना जाता है परन्तु कभी-कभी यही जीवनदायनी प्राण घातक भी हो जाती है कभी बाढ़ आने के कारण जन धन सभी का नुकसान होता है। उसी प्रकार सर्दी और गर्मी का मौसम में भी होता है पर जब ठंड या गर्मी अधिक बढ़ जाती है तो लोगों के पास इससे बचने का उपाय न होने के कारण कई लोग मौत के मुँह में भी समा जाते हैं। मौसम में इस परिवर्तन का ज़िम्मेदार स्वयं मनुष्य ही है जो अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रकृति का जिस प्रकार से हनन कर रहा है उसका परिणाम ही मौसम में इस प्रकार के अनचाहे बदलाव हमें देखने के लिए मिल रहें हैं।

आज पहले की अपेक्षा हमें बाढ़, सूखा, अकाल, अतिवृष्टि बर्फबारी आदि प्राकृतिक घटनाएँ आए दिन देखने को मिलती है। इस सब का प्रमुख कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन है जिसके परिणामस्वरूप इस तरह की घटनाएँ आज आम हो गयी है। अत:मनुष्य समय रहते न चेता तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी मानवता को अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

(ख) <u>शारीरिक शिक्षा और योग</u>

- शारीरिक शिक्षा क्या और क्यों ?
- शारीरिक शिक्षा और योग
- प्रस्ताव और अच्छे परिणाम

उत्तर -

स्वास्थ्य मानव का अमूल्य धन है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मष्तिष्क निवास करता है। मनुष्य के जीवन में आरंभ से ही शारीरिक शिक्षा और योग का महत्व रहा है।

शारीरिक शिक्षा जहाँ एक ओर हमारे शरीर से सम्बन्धित होती है वही योग तन और मन दोनों से समान रूप में जुड़ा है। शारीरिक शिक्षा हमारे तन को स्वस्थ रखने में कारगर है, उससे शारीरिक सुंदरता भी बढ़ती है। तो योग स्वास्थ्य, बाह्य सौंदर्य, आंतरिक सौंदर्य, और आध्यात्मिक से भी हमारा परिचय करवाता है।

शारीरिक शिक्षा और योग को यदि आपस में जोड़ दिया जाए तो परिणाम बड़ा सुखद होगा। इन दोनों के साथ मानव का शारीरिक

और मानसिक अर्थात् सर्वांगीण विकास होगा।वैसे भी एक प्रगतिशील समाज के लिए उसके नागरिकों का न केवल शारीरिक रूप से सक्षम होना ही जरुरी नहीं है बल्कि वह मानसिक रूप से भी स्वस्थ और सबल होना चाहिए। जिससे वह जीवन की हर चुनौतियों का सामना कर सके और एक स्वस्थ और सुन्दर राष्ट्र का निर्माण करने में अपनी भागीदारी दे सके।

(ग) <u>हमारे पर्व</u>

- पर्व क्या और क्यों ?
- पर्वों से लाभ, और कुप्रभाव
- कुप्रभाव से बचने के उपाय

उत्तर -

भारत में विभिन्न धर्म विद्यमान हैं। इस कारण यहाँ उनसे जुड़े विभिन्न त्योहार विद्यमान है। त्योहार या उत्सव हमारे सुख और हर्षोल्लास के प्रतीक है जो परिस्थिति के अनुसार अपने रंग-रुप और आकार में भिन्न होते हैं। सभी त्योहारों से कोई न कोई पौराणिक कथा अवश्य जुड़ी हुई है और इन कथाओं का संबंध तर्क से न होकर अधिकतर आस्था से होता है। ये त्योहार भारत की एकता, अखण्डता और भाईचारे का प्रतीक हैं। ये त्योहार हमारी प्राचीन संस्कृति के प्रतीक हैं और हमारी पहचान भी हैं।

त्योहार मानव जीवन में उत्साह, उमंग, रोजमर्रा के जीवन की उदासी से हमारा मनोरंजन करते हैं।त्योहार भाई चारा, प्रेम और सामाजिक एकता में भी बढ़ोतरी करते हैं। परन्तु जहाँ एक और उससे लाभ हैं तो हमारे पर्वों के साथ कुछ हानियाँ भी है जैसे पवित्र पर्व दिवाली के दिन कई लोग शराब और जुआ खेलते हैं, पटाखों के द्वारा प्रकृति को नुकसान पहुँचाते हैं। रंगों के त्योहार होली में रंगों

के बजाए रासायनिक रंगों का प्रयोग करते हैं जिससे अनेक त्वचा रोग हो जाते हैं। शराब और भांग पीकर हुडदंग मचाते हैं।

त्योहार के कुप्रभाव से बचने के लिए सरकार और समाज दोनों की भागीदारी होना जरुरी है। एक ओर जहाँ सरकार को त्योहार से पहले जागृति अभियान चलाना चाहिए। इसमें वे विज्ञापन और मिडिया का भी सहारा ले सकते हैं। त्योहार से जुड़े कुछ कानून भी सरकार को बनाने चाहिए और उन्हें तोड़ने पर सख्त कार्यवाही भी करनी चाहिए। वही दूसरी ओर सामान्य जनमानस भी त्योहार को उसके विशुद्ध रूप में लेकर ही मनाना चाहिए।

अत:यदि हर एक अपनी जिम्मेदारी को समझे तो हर एक त्योहार सही मायनों में मनुष्य के लिए यादगार त्योहार में बदल जाएगा।

प्र. 18. विज्ञान की पढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय की ओर से किए गए उपायों के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए। 5

उत्तर -

432 शाम गंज

करोल बाग़

नई दिल्ली

दिनाँक - 20 अगस्त, 2013

प्रिय सुधाकर

मधुर स्मृति

आशा करता हूँ कि तुम सकुशल होगे। यह पत्र मैं एक खास उद्देश्य से लिख रह हूँ। हमारे विद्यालय को राज्य स्तर पर आयोजित विज्ञान-प्रदर्शनी में प्रथम पुरूस्कार मिला है। साथ ही कई सारे बच्चों को विज्ञान में सर्वाधिक अंक भी मिले है और इन सबका श्रेय हमारे प्राचार्य और

शिक्षकों को जाता है जिनकी मेहनत के फलस्वरूप हमारे विद्यालय में विज्ञान की लहर चल पड़ी है।

प्राचार्य ने विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का निर्माण करवाया है। पुस्तकालय में भी विज्ञान से सम्बंधित सभी पुस्तकें प्राचार्य द्वारा मँगवाई गई है। समय-समय पर विद्यालय द्वारा वैज्ञानिक को बच्चों के मार्गदर्शन के लिए बुलवाया जाता है। विज्ञान प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है। अब पत्र समाप्त करता हूँ। आशा करता हूँ कि तुम अगला पत्र अपने विद्यालय की जानकारी देते हुए लिखोगे।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

राकेश

अथवा

हिन्दी-दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए, किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए।

उत्तर -

सेवा में,

नवभारत टाईम्स

मुंबई

विषय : हिन्दी गोष्टी सभा की जानकारी प्रकाशनार्थ हेतु पत्र।

महोदय,

मैं आपके इस प्रसिद्ध अखबार के द्वारा हमारे विद्यालय में आयोजित की गई हिन्दी गोष्टी की जानकारी को प्रकाशन करवाना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के अवसर पर गोष्टी का आयोजन किया गया था। जिसमें अनेक सम्मानीय हिन्दी लेखकों ने भाग लिया था। गोष्टी का विषय 'बर्तमान परिवेश में हिन्दी की महत्ता'

था।इस विषय पर सबने अपने-अपने विचारों से छात्रों को जानकारी से ओतप्रोत और लाभान्वित कर दिया।

आशा करता हूँ आप जल्द से जल्द हमारी इस गोष्टी को अपने पत्र में स्थान देंगें।

भवदीय

रमाकांत शुक्ला

दिनाँक - 18 सितम्बर, 2014

QUESTION BANK 365